Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

# समाज, सामाजिक संस्थाएँ और सामाजिक समस्याएँ

## ( Society, Social Institutions and Social Problems )

## B.S.W.-122

### B.A. Social Work - 2nd Semester

**Chapter Wise Reference Book**
**Including Many Solved Sample Papers**

*Based on*

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

# I.G.N.O.U.

**& Various Central, State & Other Open Universities**

By: *Harmeet Kaur*

**NEERAJ PUBLICATIONS**
*(Publishers of Educational Books)*

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 320/-

Content

# समाज, सामाजिक संस्थाएँ और सामाजिक समस्याएँ
## ( Society, Social Institutions and Social Problems )


Question Paper—June-2023 (Solved) ..... 1

Question Paper—December-2022 (Solved) ..... 1

Question Paper—Exam Held in July-2022 (Solved) ..... 1

Sample Question Paper—1 (Solved) ..... 1


| S.No. | Chapterwise Reference Book | Page |
|---|---|---|

**समाज का परिचय ( Introduction to Society )**


1. मूलभूत सामाजिक अवधारणाएँ ..... 1
( Basic Sociological Concepts )

2. मानव समाज का विकास, प्रकृति और विशेषताएँ ..... 13
( Evolution of Human Society: Nature and Characteristics )

3. सामाजिक प्रक्रियाएँ ..... 25
( Social Processes )

4. सामाजिक परिवर्तन : अवधारणा और सामाजिक परिवर्तन से संबद्ध कारक ..... 36
( Social Change: Concept and Factors Involved in Social Change )

5. सामाजिक नियंत्रण ..... 46
( Social Control )


**सामाजिक व्यवस्था और सामाजिक उप-व्यवस्थाएँ ( Social System and Social Sub-System )**


6. विवाह और परिवार ..... 57
( Marriage and Family )

7. समाज और संस्कृति : भारत में सांस्कृतिक बहुलता ..... 69
( Society and Culture: Plurality of Culture in India )

8. सामाजिक स्तरीकरण ..... 78
( Social Stratification )

9. सामाजिक संस्था के रूप में राज्य : इसकी भूमिका और अन्य संस्थाओं पर प्रभाव ..... 89
( The State as a Social Institution: Its Role and Impact on other Institutions )

| S.No. | Chapterwise Reference Book | Page |
|---|---|---|

**विवाह की सामाजिक संस्था ( Social Institution of Marriage )**


10. विवाह और परिवार : जीवन साथी का चयन ..... 101
( Marriage and Family: Choosing of Life Partner )

11. भारत में विवाह ..... 112
( Marriage in India )

12. समाज, संस्कृति, धर्म और पारिवारिक मूल्य ..... 121
( Society, Culture, Relgion and Family Values )

13. वैवाहिक जीवन और अपेक्षित भूमिका ..... 130
( Marital Life and Role Expectations )


**सामाजिक समस्याएँ और सेवाएँ ( Social Problem and Services )**


14. सामाजिक समस्याओं का परिचय ..... 140
( Introduction to Social Problems )

15. सम-सामयिक सामाजिक समस्याएँ-I ..... 150
( Contemporary Social Problems-I )

16. सम-सामयिक सामाजिक समस्याएँ-II ..... 161
( Contemporary Social Problems-II )

17. सामाजिक सुरक्षा ..... 172
( Social Defence )

# Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

*Published by:*

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

# QUESTION PAPER

*June – 2023*

*(Solved)*

## समाज, सामाजिक संस्थाएँ और सामाजिक समस्याएँ
## ( Society, Social Institutions and Social Problems )

**B.S.W.-122**

*समय : 3 घण्टे ]* *[ अधिकतम अंक : 100*

***नोट :*** *निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

**प्रश्न 1. समाज को परिभाषित कीजिए। भारतीय समाज की विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-2, पृष्ठ-20, प्रश्न 2

**प्रश्न 2. आत्मसात शब्द का अर्थ स्पष्ट कीजिए। यह समूह संघर्ष को कैसे कम करता है?**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-3, पृष्ठ-30, प्रश्न 5

**प्रश्न 3. परिवार के विभिन्न आयामों की व्याख्या कीजिए।**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-6, पृष्ठ-61, प्रश्न 3

**प्रश्न 4. संस्कृति की परिभाषा दीजिए तथा इसकी विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-7, पृष्ठ-72, प्रश्न 3

**प्रश्न 5. विवाह का क्या अर्थ है? इसके मुख्य कार्यों को सूचीबद्ध कीजिए।**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-10, पृष्ठ-103, प्रश्न 1, पृष्ठ-104, प्रश्न 2

**प्रश्न 6. विवाह के विभिन्न रूपों की व्याख्या कीजिए।**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-6, पृष्ठ-60, प्रश्न 1

**प्रश्न 7. सामाजिक समस्याओं के अध्ययन के लिए विभिन्न उपागमों पर प्रकाश डालिए।**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-14, पृष्ठ-146, प्रश्न 9

**प्रश्न 8. पर्यावरणीय निम्नीकरण का कारण बनने वाले कारकों का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-15, पृष्ठ-152, प्रश्न 2

NEERAJ PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

# QUESTION PAPER

*December – 2022*

*(Solved)*

## समाज, सामाजिक संस्थाएँ और सामाजिक समस्याएँ
**( Society, Social Institutions and Social Problems )**

**B.S.W.-122**

*समय : 3 घण्टे ]* *[ अधिकतम अंक : 100*

***नोट :*** *निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

**प्रश्न 1. अपने शब्दों में 'संघर्ष' शब्द का अर्थ स्पष्ट कीजिए और चर्चा कीजिए कि यह मानव समाज में सदैव क्यों मौजूद है?**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-3, पृष्ठ-28, प्रश्न 2

**प्रश्न 2. चर्चा कीजिए कि सामाजिक प्रगति और सामाजिक विकास में सामाजिक परिवर्तन किस प्रकार अंतर्निहित है?**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-4, पृष्ठ-39, प्रश्न 2

**प्रश्न 3. परिवार व्यवस्था की सामान्य विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-6, पृष्ठ-58, 'परिवार की सामान्य विशेषताएँ'

**प्रश्न 4. तलाक को परिभाषित कीजिए। तलाक के कारणों की व्याख्या कीजिए।**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-6, पृष्ठ-62, प्रश्न 4

**प्रश्न 5. सांस्कृतिक बहुलवाद क्या है?**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-7, पृष्ठ-73, प्रश्न 4

**प्रश्न 6. परिवार के कार्यों की व्याख्या कीजिए।**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-10, पृष्ठ-105, प्रश्न 5

**प्रश्न 7. सामाजिक अव्यवस्था के कारण उत्पन्न होने वाली कुछ सामाजिक समस्याओं को विस्तार से बताइए।**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-14, पृष्ठ-145, प्रश्न 7

**प्रश्न 8. उन सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों का वर्णन कीजिए जो पलायन ( प्रवास ) का कारण बनते हैं।**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-15, पृष्ठ-155, प्रश्न 6

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

# Sample Preview of The Chapter

*Published by:*

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

# समाज, सामाजिक संस्थाएँ और सामाजिक समस्याएँ
## ( Society, Social Institutions and Social Problems )

## मूलभूत सामाजिक अवधारणाएँ
## ( Basic Sociological Concepts )

1

### परिचय

समाजशास्त्र के सिद्धांत और सामाजिक अवधारणाओं से समाज और सामाजिक संस्थाओं को बेहतर ढंग से समझा जा सकता है। समुदाय, संघ और संस्थाएँ तथा समूह की अवधारणाएँ समाज कार्य में काफी सहयोगी होती हैं। एक समाज की विभिन्न विशेषताएँ होती हैं और विभिन्न मानदंडों द्वारा समाज का वर्गीकरण किया जा सकता है। इसी प्रकार समुदाय, संघ, संस्थाओं और समूहों की विभिन्न विशेषताएँ होती हैं। प्रत्येक समाज, समुदाय के विशेष मूल्य, नियम, परंपराएं व रीति-रिवाज होते हैं, जो उनमें रहने वाले सदस्यों के व्यवहार का मार्गदर्शन करते हैं, इसलिए लोगों को समाज, समुदाय या संघ में बने रहने के लिए कार्य करने होते हैं। समाज में समूहों के कई प्रकार होते हैं। कुछ समूह प्राथमिक समूह और कुछ द्वितीयक समूह कहलाते हैं। ये सभी परस्पर जुड़े रहते हैं। मूलभूत सामाजिक अवधारणाओं द्वारा समाज की प्रत्येक इकाई की बेहतर समझ पैदा होती है।

### अध्याय का विहंगावलोकन

#### समाज

अवधारणा के अर्थ एक या अनेक हो सकते हैं। अवधारणा एक ऐसा दृष्टिकोण, विचार या अनुभव होती है, जिसे वैज्ञानिक विश्व में स्वीकृति मिलती है, जैसे–सड़क का अर्थ है मार्ग। अवधारणा बिल्कुल सटीक और स्पष्ट होनी चाहिए। किसी विशेष वस्तु के बारे में अभिव्यक्ति उस वस्तु की अवधारणा होती है। एक अवधारणा में वैज्ञानिक चर्चा होती है, क्योंकि यह इन चर्चाओं को सामान्य आधार प्रदान करती है। इन सिद्धांतों और अवधारणाओं पर चर्चा करने से उनकी कमियों का ज्ञान होता है और नया ज्ञान उत्पन्न होता है। अवधारणा कम और सरल संप्रेषण को संभव बनाती है यानी कम समय में घटने का ज्ञान हो जाता है।

**समाज**–होर्टन और हंट के अनुसार, समाज एक संगठन है, जहां लोग एक-दूसरे से संबंधित होते हैं।

मैकाइवर द्वारा समाज को संबंधों के जाल के रूप में व्यक्त किया गया है।

एक समाज की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं–

1. समाज में पारंपरिक जागरूकता होती है।
2. समाज सामाजिक संबंधों से बना होता है।
3. समाज के मूल्य और मान्यताएँ सामाजिक संबंधों को दिशानिर्देशन करते हैं।
4. समाज के सामान्य लक्ष्य होते हैं।
5. समाज में अनेक अनुपूरक सामाजिक प्रक्रियाएँ होती हैं।
6. समाज में श्रम का विभाजन होता है।
7. समाज सदस्यों के कुल योग से अधिक है।

**समाजों का वर्गीकरण**–समाजशास्त्रियों द्वारा समाजों का विभिन्न मानदंडों के अनुसार वर्गीकरण किया गया है–

1. भौगोलिक स्थिति के आधार पर समाजों का वर्गीकरण।
2. भाषा के आधार पर समाज का वर्गीकरण।
3. प्रमुख मूल्यों के आधार पर समाज का वर्गीकरण।
4. सामाजिक जीवन की जटिलता के स्तर पर आधारित समाज।
5. राजनीतिक व्यवस्था पर आधारित समाज।
6. ऐतिहासिक अवधि के आधार पर समाजों का विभाजन।

#### समुदाय

होर्टन एवं हंट द्वारा समुदाय को ऐसे स्थानीय समूह के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसमें लोग संपूर्ण जीवन की गतिविधियां करते हैं। एक समुदाय की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

1. समुदाय लोगों का समूह होता है।
2. समुदाय एक निर्धारित भौगोलिक क्षेत्र में होता है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com



3. समुदाय के श्रम का विभाजन होता है।
4. समुदाय के सदस्य अपनी एकता और समुदाय के साथ संबद्धता के प्रति सचेत होते हैं।
5. एक सामान्य उद्देश्य की प्राप्ति हेतु सदस्य संगठित होकर समुदाय के रूप में कार्य करते हैं।
6. समुदाय की एक समान संस्कृति होती है।

**समुदाय अवधारणा का उपयोग**–समुदाय की अवधारणा समुदाय का विवरण और उनमें अंतर करने में सहायक होती है। जैसे–शहरी व ग्रामीण समुदाय। जहां शहरी समुदाय और ग्रामीण समुदाय की अलग-अलग विशेषाएँ होती हैं, परंतु कार्य के लिए समुदाय को एक इकाई का रूप माना गया है।

**समुदाय अवधारणा के प्रयोग की सीमाएं**–हालांकि प्रत्येक समुदाय की अपनी विशेषताएँ हैं, परंतु फिर भी ग्रामीण समुदाय की विशेषताएँ शहरी समाज में और शहरी समुदाय की विशेषताएँ ग्रामीण समाजों में पाई जाती हैं। समुदाय जातियों में बंटे होने के कारण इनमें हम की भावना नहीं पाई जाती। समुदाय शब्द का प्रयोग करते समय मात्र पुरुष सदस्यों का विचार मन में आता है। समुदायों में महिलाओं की बातें कम आंकी जाती हैं।

## संघ ( एसोशिएशन )

मैकाइवर के अनुसार, संघ एक ऐसा संगठन है, जो सदस्यों द्वारा समान रुचि के लिए किसी उद्देश्य या उद्देश्यों की सामूहिक पूर्ति के लिए सोच-समझकर बनाया जाता है। एक संघ की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. संघ व्यक्तियों का समूह होता है।
2. संघ सोद्देश्य होते हैं।
3. संघ के औपचारिक नियम और कानून होते हैं।
4. संघ की सदस्यता स्वैच्छिक होती है।
5. संघ का अस्तित्व सदस्यों से होता है।

**संघ और आधुनिक समाज में उनकी सार्थकता**–आधुनिक समाज संघ के निर्माण को प्रोत्साहित करता है। संघ के ऐसे उद्देश्य होते हैं, जो सरकारी नीतियों को प्रभावित करते हैं। संघ लोकतंत्र को बढ़ावा देते हैं। संघ के विभिन्न कार्य होते हैं, जैसे–नागरिकों को संगठित करना, अपनी मांग प्रस्तुत करना और सरकार के अधिकारों पर नियंत्रण करने का कार्य करना, लोगों के जीवन में सुधार हेतु सुविधाएँ प्रदान करना। आधुनिक भारत में पारंपरिक समूहों व आधुनिक दोनों संघों की विशेषताएँ मौजूद हैं। इन संघों में प्रवेश हेतु जाति और धर्म पर विचार किया जाता है और इनके उद्देश्य सरकारी नीतियों को प्रभावित करते हैं, इसलिए ये संघ न तो संपूर्ण आधुनिक या पारंपरिक ही कहा जा सकता है।

## संस्थाएँ

संस्था का अर्थ है संगठन यानी महाविद्यालय। मैकाइवर के अनुसार संस्थाएँ सामूहिक गतिविधियों को स्थापित स्वरूप या प्रक्रियाओं की स्थितियों की विशेषताएँ होती हैं।

होर्टन एवं हंट के अनुसार, संस्था लोगों द्वारा महत्त्वपूर्ण अनुभव किए जा रहे किसी उद्देश्य या कार्य को पूरा करने के लिए नियमों की व्यवस्था है। संस्थाओं को निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं–

1. संस्था का उदय समूह में सामाजिक परस्पर क्रिया में होता है।
2. संस्थाएँ मानव व्यवहार को नियंत्रित करने वाली संरचनात्मक प्रक्रियाएं होती हैं।
3. प्रत्येक संस्था की भूमिकाएं एवं प्रतिस्थितियां होती हैं।
4. संस्थाओं की भूमिकाएं समाजीकरण से सीखी जाती हैं।
5. संस्थाएँ एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं।
6. संस्था और संगठन में संबंध होते हैं।

## प्राथमिक समूह और द्वितीयक समूह

समूह को ऐसे लोगों का जमावड़ा कहा जाता है, जो भौतिक रूप से एक साथ निकट रहते हैं। एक समान आवश्यकताओं वाले लोगों के जमावड़े को समूह कहा जा सकता है। सदस्यों में एक समान चेतना व नियमित संपर्क उन्हें समूह बनाता है। एक समूह की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. समूह में एक निर्धारित संख्या में व्यक्ति होने चाहिए।
2. समूह में सदस्यों में नियमित परस्पर क्रिया होनी चाहिए।
3. समूह के सदस्यों में एक-दूसरे के बारे में चेतना होनी चाहिए।
4. सदस्य स्वयं एक इकाई होने के बारे में जानते हैं।
5. समूह का सर्वनिष्ठ उद्देश्य होना चाहिए।
6. समूह के समान आदर्श और मूल्य होने चाहिए।
7. स्थापित सामूहिक प्रतिरूप होने चाहिए।

**प्राथमिक समूह**–वे समूह जिनके सदस्य निकट संबंधी, परस्पर घनिष्ठ, वैयक्तिक व अनौपचारिक संबंध रखते हैं। प्राथमिक समूह होते हैं। प्राथमिक समूह की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. प्राथमिक समूहों का आकार छोटा होता है।
2. प्राथमिक समूहों के सदस्यों के एक समान लक्ष्य होते हैं।
3. प्राथमिक समूह अपने सदस्यों को समग्र अनुभव प्रदान करते हैं।
4. प्राथमिक समूहों में संबंध को उद्देश्य के रूप में लिया जाता है।
5. प्राथमिक समूह प्रायः दीर्घकालीन होते हैं।
7. व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्धारण में प्राथमिक समूहों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।
8. वैयक्तिक निष्ठा हेतु कभी-कभी प्राथमिक समूहों में प्रतिस्पर्धा होती है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com



**द्वितीयक समूह**–वे समूह जो प्राथमिक समूहों से बड़े, औपचारिक, गैर-वैयक्तिक व आवश्यकता आधारित संबंध रखते हैं, द्वितीयक समूह कहलाते हैं। द्वितीयक समूह की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. द्वितीयक समूहों में अपेक्षाकृत अधिक सदस्य होते हैं।
2. द्वितीयक समूहों के विशेष उद्देश्य होते हैं।
3. द्वितीयक समूहों के उद्देश्य स्पष्ट होते हैं।
4. द्वितीयक समूह के सदस्य परस्पर औपचारिक रूप से संबंध होते हैं।
5. द्वितीयक समूह सदस्यों के हितों को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

**प्राथमिक और द्वितीयक समूहों के बीच संबंध**–प्राथमिक और द्वितीयक समूहों में गहरा संबंध होता है। एक परिवार में प्राथमिक व द्वितीयक समूह मौजूद है। प्राथमिक समूह उपसमूह और गुट, जो द्वितीयक समूह के भाग होते हैं, निर्णय निर्माण प्रक्रिया में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। प्राथमिक समूह सदस्यों को द्वितीयक समूहों के तहत भावनात्मक सहारा मिलता है। ऐसे ही महाविद्यालय और सेना में भी देखा जा सकता है।

**अवधारणाओं में समानताएं एवं भिन्नताएं**–विभिन्न अवधारणाओं व समूहों में समानताओं के साथ भिन्नताओं को भी देखा जा सकता है, जैसे कि

1. आकार के आधार पर,
2. भौगोलिक स्थिति के आधार पर,
3. सदस्यता की स्वैच्छिक प्रकृति के कारण,
4. पारस्परिक क्रिया की प्रकृति,
5. सामूहिक उद्देश्य के आधार पर,
6. एक व्यापक समग्रता एवं सदस्यों के बीच संबंध,
7. सामूहिकता की अवधि।

## बोध प्रश्न

**प्रश्न 1. समाज की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?**

**उत्तर**–होर्टन और हंट के अनुसार, समाज वह संगठन है, जिसमें लोग एक-दूसरे से संबंधित होते हैं। एक समाज की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

**1. समाज में पारस्परिक जागरूकता का होना**–एक समाज की मुख्य विशेषता यह होती है कि समाज में लोगों में पारस्परिक जागरूकता होती है। समाज को लोगों का समूह इसलिए कहा गया है, क्योंकि वे एक-दूसरे के बारे में जानकारी रखते हैं। एक-दूसरे के बारे में जागरूक लोग तभी हो सकते हैं, जब लोग दूसरे की मौजूदगी में यह मानते हों कि वे सामाजिक संबंध बना सकते हैं। लोगों के समूहों से मिलकर ही समाज का निर्माण होता है।

**2. समाज सामाजिक संबंधों से बना होता है**–समाज की दूसरी महत्त्वपूर्ण विशेषता है कि एक समाज सामाजिक संबंधों से बना होता है, जैसे–दो व्यक्ति या वस्तुओं का परस्पर संबंध रखने का मतलब है कि वे दोनों परस्पर संबंध रखते हैं और उनके कार्य एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं यानी समाज में एक व्यक्ति का व्यवहार दूसरों को प्रभावित करता है। लोग दूसरों के व्यवहार से प्रभावित होते हैं। उनके परस्पर सामाजिक संबंधों से समाज बनता है।

**3. समाज के मूल्य और मान्यताएं सामाजिक संबंधों का दिशा-निर्देशन करते हैं**–समाज की अन्य विशेषता है कि सामाजिक संबंध समाज के मूल्यों और मान्यताओं के अनुसार निर्देशित होते हैं। समाज द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को एक विशिष्ट भूमिका प्रदान की जाती है और प्रत्येक व्यक्ति द्वारा उस भूमिका का निष्पादन समाज से संबंधित मूल्यों व मान्यताओं द्वारा नियंत्रित व निर्देशित होता है। लोगों को ये मूल्य व नियम समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा सिखाए जाते हैं, जो कि उनके व्यक्तित्व का विशेष हिस्सा बन जाते हैं। हालांकि लोगों को सामाजिक मूल्यों व मान्यताओं के अनुरूप बनाने हेतु, सामाजिक नियंत्रण व निर्देशन की औपचारिक व अनौपचारिक कंपनियां होती हैं। ये कंपनियां उनकी सकारात्मक या नकारात्मक स्वीकृति को लोगों पर लागू करती है यानी सामाजिक संबंध भी समाज के मूल्य व मान्यताएं निर्धारित करते हैं।

**4. समाज के सामान्य लक्ष्य होते हैं**–समाज की प्रमुख विशेषता है कि प्रत्येक समाज के सामान्य लक्ष्य होते हैं, ताकि समाज का स्थायित्व बना रह सके। स्वयं को बनाए रखने के लिए एक समाज को कुछ कार्य करने होते हैं, इन्हें कार्यात्मक आवश्यकताएं भी कहा जाता है, जैसे–एक सामान्य लक्ष्य, परिवेश के प्रति एक समान गतिशीलता, संप्रेषण, एक समान मूल्यों का समूह, प्रजनन और बच्चों का पोषण, बच्चों का समाजीकरण, सदस्यों के लिए वांछित भोजन जुटाना, पर्याप्त संसाधन जुटाना, अपने सदस्यों को प्राकृतिक व मानव निर्मित्त आपदाओं से बचाना, उनमें आपसी संघर्ष एवं मतभेद दूर करने के विशिष्ट तरीके निर्मित करने और उन्हें लागू करना। हालांकि प्रत्येक समाज के उपर्युक्त कार्यों को करने के तरीके भिन्न-भिन्न हो सकते हैं।

**5. समाज में अनेक अनुपूरक सामाजिक प्रक्रियाएं होती हैं**–समाज में अनेक अनुपूरक सामाजिक प्रक्रियाएं होती हैं। उनके विशेष कार्य होते हैं। प्रत्येक समाज में लोग एक जैसे विचारों वाले होते हैं। वे कार्य सहयोग करते हैं। जबकि कई समाजों में लोग भिन्न-भिन्न प्रवृत्ति के होते हैं, जहां उनके बीच संघर्षों को स्पष्ट रूप में देखा जा सकता है। समाज के समूहों में अन्य समूह और उनके उप-समूह होते हैं, जिनकी अपनी गतिविधियां होती हैं। विभिन्न प्रकार की संबद्धता सहयोग, प्रतियोगिता और संघर्ष आदि की गतिविधियां समाज का निर्माण करती हैं।

**6. समाज में श्रम का विभाजन होता है**–समाज की अन्य विशेषता है कि समाज में श्रम का विभाजन होता है, क्योंकि समाज

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com



की देखभाल की विभिन्न गतिविधियां किस एक व्यक्ति द्वारा संपूर्ण नहीं ही जा सकती, इसलिए इन गतिविधियों यानि कार्यों को सदस्यों में विभाजित किया जाता है। श्रम का विभाजन समाज की जटिलता के स्तर पर निर्भर करता है। श्रम के विभाजन के विभिन्न आधार हैं, जैसे–लिंग, शिक्षा, व्यवसाय, जाति, धर्म या वर्ग आदि।

**7. समाज सदस्यों के कुल योग से अधिक है**–समाज की अन्य विशेषताओं में से मुख्य विशेषता है कि समाज सदस्यों के कुल योग से अधिक है। प्रत्येक समाज की स्वयं की शक्ति होती है, जो सामाजिक सदस्यों को प्रभावित करती है। समाज वंशानुगत तथ्यों के साथ चलने वाला वातावरण है, जो व्यक्तियों के व्यक्तित्व को निर्धारित करता है। समाज लोगों को प्रभावित करता है। समाज में शक्ति कानून, धर्म और परिवार जैसे अन्य सामाजिक संस्थाओं द्वारा लागू की जाती है। समाज का रूप व्यापक होता है, जिसमें लोगों के समूह शामिल होते हैं।

**प्रश्न 2. आधुनिक संघों की क्या विशेषताएँ हैं?**

**उत्तर**–आधुनिक संघ विभिन्न स्वरूप, प्रकार, आकार और उद्देश्य का हो सकता है। मैकाइवर के अनुसार, संघ एक ऐसा संगठन का रूप होता है, जो सदस्यों द्वारा समान रुचि के किसी उद्देश्य या उद्देश्यों के सामूहिक पूर्ति के लिए सोच-समझकर बनाया जाता है। आधुनिक संघों की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

**1. संघ व्यक्तियों का समूह होता है**–आधुनिक संघों की मुख्य विशेषता है कि यह ऐसे व्यक्तियों का समूह होता है, जिनका एक समान उद्देश्य होता है। ये समूह एक-दूसरे से अपने हितों की पूर्ति के लिए संबंधित होते हैं। यदि किसी समूह के उद्देश्यों की पूर्ति होती है, तो साथ ही उस समूह के सदस्यों के उद्देश्यों की पूर्ति स्वयं ही हो जाती है। इस प्रकार एक आधुनिक संघ का निर्माण व्यक्तियों के समूह द्वारा किया जाता है।

**2. संघ सोद्देश्य होते हैं**–आमतौर पर प्रत्येक सदस्य को संघ के उद्देश्य की स्पष्ट रूप से जानकारी होती है, क्योंकि किसी भी संघ के उद्देश्य अपने सदस्यों के हितों का वर्णन करते हैं, जिन्हें इसके सदस्य पूरा करना चाहते हैं, इसलिए संघ अपने उद्देश्यों की स्थिति पर विचार करने के बाद निर्धारित करता है। संघ की सफलता का आधार निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति है और संघ की असफलता का आधार निर्धारित उद्देश्य को प्राप्त न कर पाने पर निर्भर करता है। संघ के उद्देश्य आमतौर पर सार्वजनिक हितों को ध्यान में रखते हुए निर्धारित किए जाते हैं।

**3. संघ के औपचारिक नियम और कानून होते हैं**–आधुनिक संघों के औपचारिक नियम और कानून होते हैं। कई बार छोटे संघ के औपचारिक नियम नहीं होते, क्योंकि उनके सदस्य परस्पर स्थित व्यक्तिगत संबंधों के आधार पर कार्य करते हैं, परंतु यदि संघ का आकार बड़ा है, तो उस संघ की कार्य प्रणाली कठिन हो जाती है, इसलिए सामान्य नियम और कानून बनाए जाते हैं। इन औपचारिक नियम और कानूनों के आधार पर यह निर्धारित किया जाता है कि संघ के सदस्य किन्हीं विशेष परिस्थितियों में कैसे कार्य करेंगे। विभिन्न संघों के नियम व कानून मौखिक हो सकते हैं, परंतु ज्यादातर संघों के नियम और कानून लिखित होते हैं। संघ के कानूनों और नियमों के तहत उसके सदस्य क्षेत्र कार्य के दौरान संघ के अधिकारियों से संघ का विवरण दिखाने के लिए अनुरोध कर सकते हैं, क्योंकि यह दस्तावेज उस संघ के उद्देश्य, कार्य शैली और अन्य संबंधित सूचनाओं का विवरण प्रस्तुत करते हैं।

**4. स्वैच्छिक सदस्यता**–आधुनिक संघों की स्वैच्छिक सदस्यता होती है। संघ आधुनिक समाजों की देन होती है, इसलिए संघ के सदस्य अपनी इच्छा से इसके सदस्य बनते हैं। कई संघों में संघ का सदस्य बनने की ज्यादा फारमैलिटी नहीं होती। मात्र नाम लिखवाने से ही सदस्यता हो जाती है, परंतु कई संघ सदस्य बनने के लिए नियम बनाते हैं यानी जरूरी दस्तावेज जमा कराने से संघ के सदस्य बनते हैं, जो कोई व्यक्ति इन नियमों को पूरा करता है, तो उसे संघ का सदस्य बनने की अनुमति दी जाती है। कई बार संघ का सदस्य बनने की फीस भी रखी होती है, जिसे देकर संघ की सदस्यता ली जा सकती है। इस प्रकार संघ की सदस्यता स्वैच्छिक होती है।

**5. संघ का अस्तित्व सदस्यों से होता है**–आधुनिक संघों का अस्तित्व सदस्यों से होता है यानी संघ में नये सदस्य प्रवेश करते रहते हैं और जाने वालों के बदले में अन्य सदस्य इसकी सदस्यता लेते रहते हैं।

**6. सरकारी नीतियों को प्रभावित करने वाले उद्देश्य**–आधुनिक संघों के उद्देश्य सरकारी नीतियों को प्रभावित करने वाले होते हैं। ये लोकतंत्र को प्रोत्साहित करते हैं। आधुनिक संघ नागरिकों को एकत्रित करने की मांग को प्रस्तुत करने और सरकार के अधिकारों पर नियंत्रण करने का कार्य करते हैं। ये सरकारी नीतियों को प्रभावित करते हैं। आधुनिक संघ विभिन्न प्रकार की सेवाएं प्रदान करते हैं, जिनके द्वारा लोगों के जीवन स्तर में सुधार होता है।

**प्रश्न 3. प्राथमिक समूह और द्वितीयक समूह के दो-दो उदाहरण बताइए।**

**उत्तर**–आमतौर पर लोगों का ऐसा समूह जो भौतिक रूप से एक साथ निकट रहता है, समूह कहलाता है। लोगों की एक समान आवश्यकता, समान चेतना और नियमित संपर्क आदि गतिविधियां एक समूह में मौजूद होती हैं। समूह दो प्रकार के हैं–

**प्राथमिक समूह**–प्राथमिक समूह वे समूह होते हैं, जिनके सदस्य परस्पर संबंधित, घनिष्ठ, वैयक्तिक और अनौपचारिक संबंध रखते हैं। आमतौर पर प्राथमिक समूहों का आकार छोटा होता है और इन समूहों के सदस्यों के लक्ष्य एक समान होते हैं। यह अपने

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com